ऋग्वेद

यजुर्वेद

वर्ष-१२ अंक-४

२७ दिसम्बर २०१५

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-15

एक प्रति- २०-०० रु.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ अंक-४

२७ दिसंबर २०१५
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	4
भागवत खण्डन	6
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	7
प्रकृति	8
दुकान	10
महर्षि दयानंद और आर्य समाज के संबंध में	12
वेदों में क्या है?	15
चिड़िया और महात्मा	16
लाला लाजपत राय	18
अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	21
उज्जैन सिंहस्थ	22
यज्ञ का महत्व	25
आओ हम यज्ञमयी जीवन जियें...	26

जनवरी माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

1	ईसवीं सन् प्रारंभ/नववर्ष
12	राष्ट्रीय युवा दिवस, स्वामी विवेकानंद जयंती
15	थल सेना दिवस
23	नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती
24	बसंती पंचमी/सरस्वती जयंती
26	गणतंत्र दिवस
28	लाला लाजपत राय जयंती
30	महात्मा गांधी पुण्यतिथि शहीद दिवस

सम्पादकीय :

धर्म के नाम पर ....

आज समस्त विश्व में चहुंओर हा–हांकार मच रहा है, हिंसा, आगजनी का खुला ताण्डव प्रतिदिन किसी न किसी माध्यम से देखा और सुना जा रहा है। जो लोग इस प्रकार हिंसा को हथियार बनाकर बेगुनाहों का कत्ले आम कर रहे हैं, सम्पत्ति को क्षति पहुंचा रहे हैं, उनकी दृढ़ मान्यता है कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं वह धर्म के नाम पर कर रहे हैं। यह भी सत्य है कि यह पहलीबार नहीं हो रहा है और यह भी सत्य है कि यह पहले से अलग अलग समय में अलग अलग मतों के अनुयांयियों के द्वारा किया जाता रहा है। कभी यहूदी, कभी ईसा के अनुयायी, कभी मोहम्मद के अनुयायी इसी प्रकार के घृणित कार्य करते रहे हैं, इसका इतिहास साक्षी है। जब जब इस प्रकार की घटनाएं घटित होती है, सारा देश मातम मनाता है। अन्यायियों के विरूद्ध भर्त्सना करके उन्हें कोसता है। किन्तु कुछ समय के पश्चात फिर इसे भुला देता है। कुछ समय बीत जाने के बाद पुनः इन्हीं कुकृत्यों की पुनर्रावृत्ति होती है, और फिर देश और समाज इन पर आंसु बहाता है। यह क्रम सदियों से चला आ रहा है और आगे भी इसी प्रकार चलता रहेगा। इन दुर्घटनाओं में यदि अन्तर होगा तो संगठनों के अलग अलग नाम का होगा और पीड़ित होने वाले व्यक्तियों व स्थान का होगा। यह विडम्बना ही है कि इस दुःखद और पूरे विश्व को हिला देने वाली क्रूर घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसलिए उसकी स्थायी रोकथाम का कोई प्रयास गंभीरता से समाज के द्वारा नहीं किया गया।

इससे भी दुःखद यह है कि जिन कारणों से इस प्रकार के पाप, अत्याचार, हिंसा को किया जाता है उनके पीछे धार्मिक भावना बतायी जाती है। अलग अलग ईश्वर के नाम पर यह सब करते हैं। यह कितना हास्यास्पद है कि जो धर्म मनुष्यता सिखाता है, अहिंसा का सन्देश देता है, किसी का दिल दुःखाना पाप बताता है तथा जो व्यवहार अपने को अच्छा लगता है वैसा दूसरों के प्रति करने का पाठ पढाता है। **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** का पाठ पढ़ाता है उस धर्म के नाम पर यह सब करके धर्म को बदनाम कर रहे हैं। ईश्वर, अल्लाह, गॉड, सांई के नाम पर परमात्मा को बांटने वाले उस परमात्मा के नाम पर जो दयालु है, सबका रक्षक है, पालक है, संसार की व्यवस्था करता है, उसके नाम पर जघन्य अपराधों को परिणाम दे रहे हैं और ईश्वर की आज्ञा के विरूद्ध कार्य करके उसको बदनाम कर रहे हैं। ऐसे लोगों को ही देखकर ईश्वर के और धर्म के प्रति लोगों में आस्था समाप्त हो जाती है और वे नास्तिक हो जाते हैं। इसीलिए किसी शायर ने ऐसे अमानुषिक काम करने वाले भक्तों को देखकर लिखा –

खुदा के बन्दों को देख खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया।
जिस खुदा के ऐसे बन्दे हों, वह कोई अच्छा खुदा नहीं।।

इस प्रकार का अमानुषीय कम तब तक चलता रहेगा, जब तक धर्म के सही मर्म को समाज नहीं समझेगा। आज जो भी समस्याएं, अलगाव, आगजनी, हिंसा और धर्मान्तरण जैसे कार्य चल रहे हैं, उन सबके पीछे धर्म नहीं है उन सबके पीछे सम्प्रदाय है, मजहब है। ऐसी मजहबी विचारधारा अपना आधिपत्य संख्या बाहुल्यता या हिंसा के आधार पर पूरी दुनिया पर करना चाहते है और इसलिए एक दहशत समाज में फैलाकर उसे अपना अस्तित्व स्वीकार करवाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज दुनिया में जितना सम्प्रदायों का प्रचार है और उनकी तुलना में धर्म का प्रचार नगण्य सा है। सम्प्रदाय और धर्म दोनों के उद्देश्य अलग–अलग हैं। सम्प्रदाय किसी भी प्रकार से संख्या बढ़ाने में विश्वास रखता है, वहीं धर्म का उद्देश्य अच्छे व्यक्तियों का निर्माण करना है। सम्प्रदाय कुछ व्यक्तियों तक सीमित है और उनके ही हितों को वह महत्व देता हैं किन्तु धर्म में कोई जाति, सम्प्रदाय या छोटे बड़े का भेदभाव नहीं है वह सबके लिए होता है। सम्प्रदाय मानवीय विचारों पर आधारित है और धर्म ईश्वरीय ज्ञान का परिणाम है। जब तक सम्प्रदाय और धर्म को एक समझा जाएगा तब तक समाज धोखे में रहेगा और अधार्मिक कृत्यों को भी धर्म के नाम पर करता रहेगा, सहता रहेगा। वर्तमान में चाहे धर्म के आधार पर बने हुए मुल्कों की समस्याएं हों, जिसे उन्होंने दो देशों का विवाद बनाकर रख लिया है। चाहे धर्म के नाम पर समाज को बांटने का कार्य कर रहे हों, यह सब व्यक्ति समाज देश और विश्व के लिए घातक है। उसी का उदाहरण बम्बई, अमेरिका या पेरिस में हुए हमले है, जिनके लिए एक ही साम्प्रदायिक विचारधारा का चेहरा सामने आया है।

इसलिए मानव रक्षा और संस्कृति रक्षा के लिए आज धर्म का जो सही स्वरूप है। जो सबके लिए सदा के लिए और पूर्ण है भाषा, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर है, सनातन है। जिसका आधार परमात्मा का ज्ञान वेद है। उस पर ही मानव समाज को अपना विश्वास स्थापित करना होगा। ऐसा करने से ही इस प्रकार के दुष्कर्मों का सशक्त विरोध हो सकता है और यही उसके निदान का एकमात्र कारण है। आज आवश्यकता है धर्म के नाम पर जो गलत हो रहा है उसे धार्मिकता का चोला न पहनाए अपितु उसे एक साम्प्रदायिक अमानवीय समझकर ही उसकी भर्त्सना करना चाहिए।

ईश्वर –

ईश्वर निर्विकार और अनादि है तथा विकार रहित है सूक्ष्म से सूक्ष्म है। राग और वैराग्य से रहित है। प्राणीमात्र की आत्मा में संसार चक्र चलाने के लिए राग व वैराग्य उत्पन्न करने वाला है इसलिए उसे ईश्वर कहते हैं।

महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय

भागवत खण्डन

प्रश्न 1 : महर्षि के जीवन चरित्र को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने भागवत पुराण का बहुत खण्डन किया था। क्या इस विषय पर भी उन्होंने कोई ग्रंथ लिखा है ?

उत्तर : हॉ, उन्होंने भागवत खण्डनम् नामक ग्रंथ लिखा था।

प्रश्न 2 : यह खण्डन श्रीमद् भागवत (वैष्णव सम्प्रदाय) के विषय में है अथवा देवी भागवत विषय में ?

उत्तर : यह भागवत खण्डनम् नामक ग्रंथ श्रीमद्भागवत जो वैष्णव सम्प्रदाय का मुख्य ग्रंथ है, उसके विषय में है।

प्रश्न 3 : इस ग्रंथ का क्या कोई अन्य नाम भी है ?

उत्तर : वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ होने से इसका दूसरा नाम वैष्णवमत खण्डन भी है। पं. लेखरामजी ने इसका नाम भड़वाभागवत एवं पाखण्ड खण्डन भी लिखा है।

प्रश्न 4 : यह ग्रंथ कितना बड़ा है ?

उत्तर : यह एक छोटी सी पुस्तिका है, सात पृष्ठ की।

प्रश्न 5 : इसकी रचना महर्षि ने कब की थी ?

उत्तर : संवत् 1923 के आरम्भ में। यह महर्षि की दूसरी पुस्तक थी।

प्रश्न 6 : यह किस भाषा में है ?

उत्तर : यह मूल पुस्तक सुन्दर संस्कृत भाषा में है। बाद में श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इसका हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया।

प्रश्न 7 : क्या यह अभी उपलब्ध है ?

उत्तर : हॉ, यह उपलब्ध है और ऋषि की उपलब्ध पुस्तकों में यह सर्वप्रथम रचित पुस्तक है।

शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण

प्रश्न 1 : शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण नामक ग्रंथ किस विषय पर लिखा गया है ?

उत्तर : यह ग्रंथ सहजानन्द द्वारा प्रतिपादित स्वामी नारायण मत का खण्डन करने के लिए लिखा गया है। इस ग्रंथ का दूसरा नाम स्वामी नारायणमत खण्डन भी है।

प्रश्न 2 : स्वामी सहजानन्द कौन थे ?

उत्तर : इस मत के अनुयायी लोग सहजानन्द को नारायण का अवतार मानते थे।

प्रश्न 3 : नारायण से अभिप्राय क्या है ?

उत्तर : गोलोक और वैकुण्ठ में रहने वाले चतुर्भुज द्विभुज और लक्ष्मीपति को वे नारायण मानते हैं।

प्रश्न 4 : खण्डन किसको आधार मानकर किया गया ?

उत्तर : सहजानन्द द्वारा रचित शिक्षापत्री के अंशों को लेकर ही स्वामीजी ने असत्य और वेद के विरूद्ध बातों का खण्डन किया है।

प्रश्न 5 : यह पुस्तक मूलतः कौन–सी भाषा में है ?

उत्तर : मूलतः संस्कृत भाषा में है, उसका गुजराती अनुवाद स्वामीजी ने किया। उसी गुजराती से हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

प्रश्न 6 : इस ग्रंथ का रचना काल क्या है ?

उत्तर : ग्रंथ की रचना का समाप्ति काल संवत् 1931, पौष मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी (13 जनवरी, सन् 1875, रविवार) का दिन है।

प्रश्न 7 : इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ था ?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण संवत् 1933 के आरम्भ में ओरियण्टल प्रेस बम्बई से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 8 : पुस्तक का गुजराती अनुवाद किसने किया था ?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया था।

प्रकृति

प्रश्न 16 : क्या ईश्वर की सहायता के बिना पांच महाभूतों से रज वीर्य मिलने से स्वतः शरीर का निर्माण हो सकता है ?

उत्तर : नहीं, बिना ईश्वर की सहायता से पांच महाभूतों से रज वीर्य के मिलने से स्वतः शरीर का निर्माण नहीं हो सकता है।

प्रश्न 17 : प्रकृति सर्वत्र व्यापक है या नहीं ?

उत्तर : प्रकृति सर्वत्र व्यापक नहीं है बल्कि एकदेशी है अर्थात एक निश्चित सीमा में फैली हुई है किन्तु ईश्वर उसके बाहर भी विद्यमान है।

प्रश्न 18 : प्रलय अवस्था कैसी होती है ?

उत्तर : प्रलय अवस्था में घोर अन्धकार होता है। इस काल में न सूर्य होता है, न चॉद, न पृथ्वी, न कोई शरीरधारी होता है। अपितु सर्वथा सुनसान, प्रकाश रहित अन्ध्कार जैसी अवस्था होती है।

प्रश्न 19 : प्रलय काल कितना होता है ?

उत्तर : प्रलय काल 4 अरब 32 करोड़ वर्ष का होता है।

प्रश्न 20 : प्रलय काल की गणना (हिसाब) कौन करता है ?

उत्तर : प्रलय काल की गणना ईश्वर करता है।

प्रश्न 21 : प्रकृति के साथ जीव क्यों जुड़ता है और कब जुड़ता है ?

उत्तर : प्रकृति के साथ जीव अपनी अविद्या के कारण जुड़ता है तथा सृष्टि के आरंभ में जुड़ता है और मुक्ति से लौटने वाला जीव सृष्टि के मध्य में भी प्रकृति से जुड़ता है।

प्रश्न 22 : जीवात्मा प्रकृति के बन्धन से कब छूटता है ?

उत्तर : जब प्रकृति और प्राकृतिक पदार्थों के प्रति आसक्ति को समाप्त कर पूर्ण वैराग्य को प्राप्त कर लेता है अर्थात् राग, द्वेष, आदि समस्त क्लेशों को समाधि लगाकर नष्ट कर देता है तब प्रकृति के बन्धन से छूट जाता है।

प्रश्न 23 : मानव जीवन को सफल करने हेतु चार पुरूषार्थ कौन–कौन से हैं ?

उत्तर : 1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम 4. मोक्ष। इन चार पुरूषार्थों को सिद्ध कर लेना मानव जीवन को सफल करने का उपाय है।

प्रश्न 24 : जैसे सुख गुण प्रकृति का है, वैसे ही क्या ज्ञान गुण भी प्रकृति का है ?

उत्तर : नहीं ज्ञान गुण प्रकृति का नहीं है अपितु चेतन का है।

प्रश्न 25 : क्या मन रबर की तरह फैलता सिकुड़ता है ?

उत्तर : नहीं मन रबर की तरह फैलता सिकुड़ता नहीं है।

प्रश्न 26 : क्या सत्व, रज, तम तीनों के बिना केवल दो गुणों से कोई पदार्थ बन सकता है ?

उत्तर : सभी पदार्थों में तीन गुण होते ही हैं चाहे वे न्यून, अधिक क्यों न हों। नहीं, मात्र दो गुणों से कोई पदार्थ नहीं बन सकता।

प्रश्न 27 : अन्न (भोजन) कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : अन्न तीन प्रकार का होता है 1– सात्विक 2– राजसिक 3– तामसिक।

प्रश्न 28 : क्या अन्न का प्रभाव मन पर पड़ता है ?

उत्तर : हॉ, सात्विक अन्न खाने से मनशुद्ध होता है, राजसिक अन्न से मन चंचलता आती है और तामसिक अन्न मोह, आलस्य आदि उत्पन्न करता है।

प्रश्न 29 : मानव जीवन को स्वस्थ रखने के मूल आधार स्तंभ कौन कौन से हैं ?

उत्तर : मानव जीवन को स्वस्थ रखने हेतु मूल आधार आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य का उत्तम प्रकार से सेवन करना है।

शरीर इन्द्रियॉ

प्रश्न 30 : मानव शरीर प्राप्ति का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर : मानव शरीर प्राप्ति का प्रयोजन अपने कर्मफल का भोग करना एवं मोक्ष (दुःखों से छूटना) की प्राप्ति करना है।

प्रश्न 31 : आत्मा के कर्म करने के साधन कितने हैं और कौन–कौन से हैं ?

उत्तर : आत्मा के कर्म करने के दो प्रकार के साधन हैं – 1) आन्तरिक साधन 2) बाह्य साधन – मन, बुद्धि, अहंकार आदि। 2 – बाह्य साधन हाथ, पैर, मुंह, नाक, कान आदि।

प्रश्न 32 : शरीर में कुल कितनी इन्द्रियां हैं उनके नाम बतायें।

उत्तर : शरीर में कुल ग्यारह इन्द्रियॉ हैं 1– पांच कामेन्द्रियां 2– पांच ज्ञानेन्द्रियां 3– मन।

प्रश्न 33 : मन का मुख्य कार्य क्या है ?

उत्तर : संकल्प और विकल्प करना मन का मुख्य कार्य है।

प्रश्न 34 : पांच ज्ञानेन्द्रियों के नाम एवं उनके कार्य बतायें ?

उत्तर :

इन्द्रिय	कार्य
घ्राण	गंध लेना
रसना	स्वाद लेना
चक्षु	देखना
श्रोत्र	सुनना
त्वक्	स्पर्श करना

– आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः

दुकान

सारी दुनिया बन गई दुकान,
तरह–तरह के सजे सामान।
हर चीज यहां उपलब्ध है,
देख कर हम स्तब्ध हैं।।

चीजों के साथ ईमान भी बिकता है,
साहित्यकार भी चापलूसी के गीत लिखता है।
ये कैसा अजीब बदलाव आया है,
चन्द सिक्कों में सब कुछ गंवाया है।
वस्तु, सेवा, विचार, धरम, ईमान, सब कुछ बेचा जा रहा।
इन्हें बेच–बेच कर, निर्धनता दूर हटा रहा।।

पर निर्धनता दूर कर हमने, निधन स्थिति पाई है।
पल–पल बेचैन हुआ, सुख चैन की नींद गंवाई है।।

शिक्षा बिकती, बिकती कथाएं,
क्या–क्या बिकता तुम्हें बताएं।
रिश्ते बिकते, अस्मत बिकती,
सेवा बिकती, भक्ति बिकती।।

भगवान बिकते, मन्दिर बिकते,
पूजा बिकती, दर्शन बिकते।
प्रसाद बिकता, पण्डा बिकता,
कानून का डण्डा बिकता।

बिकती हंसी, व्यवहार बिकता,
सिक्कों में सदाचार बिकता।

शिक्षा बिकती, भिक्षा बिकती,
डिग्रियां बिकती सरेआम।
थाने बिकते, पोस्ट बिकती,
ट्रांसफर में भी लगते दाम।।

बिक गया सारा तन और मन,
नहीं सुरक्षित रहा, कफन।
बेच चुके हैं ये अपने आप को,
नहीं छोड़ेगे सगे बाप को।।
बेचने की हदें तोड़ी हैं।
मॉ की सुरक्षा भी न छोड़ी हैं।।
बेच सकते सबकुछ ये भेड़िये,
अब बचा नहीं धरम–ईमान।
नजर रखना देशवासियों,
कहीं बेच न दें, ये हिन्दुस्तान।।

– प्रकाश आर्य, महू

स्वास्थ्य के लिये थोड़ा हंसिये भी

0 तीन गप्पोड़ी सड़क पर खड़े होकर बातें कर रहे थे।

पहला बोला – मेरे पिताजी बहुत बड़े तैराक हैं, वो चार घण्टे तक पानी के अन्दर ही तैर सकते हैं।

दूसरा बोला – बस इतनी सी बात, मेरे पिताजी तो पूरे दिन पानी के अन्दर तैर सकते हैं।

तीसरा बोला – क्या बच्चों जैसी बातें कर रहे हो, मेरे पिताजी तो चार साल पहले गए थे पानी के अन्दर तैरने और अभी तक ऊपर नहीं आए हैं।

0 एक बेरोजगार युवक नौकरी के लिए एक कम्पनी के मैनेजर के पास गया और बोला – सर आप मुझे महीने के एक लाख रूपए वेतन, एक फ्लैट, एक कार दे सकते हो तो मैं नौकरी के लिए तैयार हूँ।

मैनेजर बोला – मैं आपको दो लाख रूपए वेतन, दो कार, दो फ्लेट दूंगा।

यह सुनकर युवक बोला – सर, आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं।

मैनेजर ने कहा – श्रीमान शुरूआत तो आपने ही की थी।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां

यूं तो कितने ही महापुरूष हुए दुनियां में।
कोई गुरू देव दयानन्द सा देखा न सुना।।

यह पंक्तियां कोरी कल्पना नहीं है महर्षि के जीवन का यथार्त है। महर्षि के पराक्रम, विद्वता, साहस और कार्यों को देखकर किसी के मुख से ये उद्‌गार निकलना सहज होगा।

यह तो दुर्भाग्य है कि महर्षि की घोर तपस्या और बलिदान को उसकी योजना को समाज उतना नहीं समझ ही नहीं पाया।

जिस प्रयोजन के लिए यह सब हुआ था। सत्य सिर पर चढ़कर बोलता है, इसलिए महर्षि को उन व्यक्तियों ने जो सैद्धान्तिक रूप से भिन्नता रखते थे उन्होंने भी उन्हें उनके कार्यों को चरित्र को सराहा। कम से कम उस ऋषि के अपने को अनुयायी कहलाने वालों को इस पर पुनः चिन्तन करके महर्षि के त्याग तपस्या बलिदान का मूल्यांकन करना चाहिए। महर्षि के सपनों को भूलने के स्थान पर उन्हें पूर्ण करने हेतु प्रयत्न करना चाहिए। यही उस ऋषि के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है। महर्षि के संबंध में अनेक विद्वानों, नेताओं, विचारकों ने अपनी लेखनी से उनकी महानता का वर्णन किया है, उनमें से कुछ व्यक्तियों की भावना इस प्रकार प्रस्तुत की जा रही है।

मिस्टर जे. ऐम्जे मैक्डानल्ड : भूतपूर्व प्रधानमन्त्री इंगलैण्ड

अपनी "अवेकनिंग ऑफ इण्डिया" (**Awakening of India**) नामक पुस्तक में लिखते हैं "आर्य समाज विशेष रूप से एक धार्मिक संस्था है और इसकी आधारशिला स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं के प्रचार प्रसार के उद्‌देश्य से है। स्वामीजी उन पवित्र आत्माओं में से थे जो हिन्दुओं के धार्मिक जीवन के उथल पुथल के युग में प्रकट हुए। स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् 1824 में हुआ और 1883 में उनका स्वर्गवास हो गया। यदि एक वाक्य में सारी बात कहनी हो तो यह है कि उनकी शिक्षा का झुकाव हिन्दू धर्म को फिर से वेदों की पवित्रता की ओर ले जाना था। मूर्तिपूजा ने हिन्दुओं को बहुत नीचे गिरा दिया था और प्रत्येक सामाजिक दोष उत्पन्न कर दिया था।"

आर्य समाज प्राचीन समय की उस जाग्रत अवस्था का एक चिन्ह है जो कि भारत में आजकल प्रकट हो रहा है। आर्य समाज वेदों की विश्वव्याप्ति का स्वप्न देखता है, इसके लिए स्वामी दयानन्द ने न केवल आर्यों में प्राण ही फूंके प्रत्युत सिद्धान्त भी सिखलाये। उनकी शिक्षा का एक भाग यह भी है कि आर्य चुने हुए लोग हैं और वेद चुनी हुई पवित्र पुस्तक है और भारत चुनी हुई पृथिवी है। एक प्रकार से वह जंगजू मिश्नरी (आक्रामक प्रचारक) था। वह संकल्प का दृढ़, विचारों का स्वतन्त्र, स्थिरनिश्चयी तथा शुद्ध और पवित्र था और ये ही गुण उसके अपने अनुयायियों को प्रदान किये हैं।

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

स्वामी दयानन्द मेरे गुरू हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरू माना है। वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरू ने मुझे स्वतन्त्रता पूर्वक विचार करना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।

देवता स्वरूप भाई परमानन्दजी

स्वामी दयानन्द उन रोशनी के मीनारों में से एक हैं, जो संसार को सत्य का मार्ग दिखाने के लिए आते है और भटकते लोगों को मार्ग दिखला कर चले जाते हैं।

योगीराज श्री अरविन्द जी

वह दिव्य ज्ञान का महान सैनिक, ईश्वरीय सृष्टि में एक योद्धा मनुष्यों और संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का निर्भीक और शक्तिशाली विजेता था। उसके चिन्तन से मेरे सामने आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्तिशाली मूर्ति उपस्थित होती है। इन दा शब्दों का, जो कि हमारी धारणाओं के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं मिश्रण ही मुझे दयानन्द की उपर्युक्त परिभाषा प्रतीत होती है......... उसके व्यक्तित्व की व्याख्या यूं की जा सकती है कि वह एक ऐसा मनुष्य था जिसकी आत्मा में परमात्मा की अनुभूति, ऑखों में दिव्य तेज और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन तत्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके।

महात्मा गांधी

(स्वामी दयानन्द एक भारी विद्वान तथा संशोधक थे।) देश की आवश्यकता को देखकर आपने घर को त्याग दिया। ऐसे व्यक्ति का यदि कोई अपमान करेगा तो मैं उसे महापापी समझूंगा। मुझे आर्य समाज बड़ा प्रिय है। यह बुद्धि के प्रयोग से काम करता है और उसका काम देश के लिए लाभकारी है।

महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरूषों में एक थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है। छुआछूत का प्रबल प्रतिवाद निःसन्देह दयानन्द की हमें महान देन है।

माता कस्तूरबा

स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दीख पड़ती है इसलिए केवल आर्य समाजियों के लिए ही नहीं, वरन् सारी दुनिया के वे पूज्य हैं।

श्री रैम्जे मैक्डौनल्ड : इंगलैण्ड के स्वर्गीय प्रधानमन्त्री

दयानन्द सैनिक मनोवृत्ति की धर्म परम्परा के अंग थे, उनके चरित्र में दृढ़ता, स्वतन्त्रता, प्रभावशालिता और सुधारप्रियता थी।

फ्रांस के सुप्रसिद्ध दार्शनिक श्रीयुत रोमन रोलां

दयानन्द ने भारत के शक्ति–शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, दृढ़ता और सिंह पराक्रम फूँक दिया। उसकी ध्वनि वीरोचित शक्ति के साथ गूँज उठी। दयानन्द छुआछूत के अस्तित्व के अन्याय को सहन करने को तैयार न थे और उनके समान पददलित अधिकारों का पोषक आज तक कोई नहीं हुआ। दलित जातियों को समानता के आधार पर आर्य समाज में प्रवेश दिया गया, क्योंकि आर्य कोई उपजाति नहीं है।

भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता और साहस से काम लिया। वे राष्ट्रीय संगठन और पुनर्निर्माण के उत्साही सूत्रधारों में से एक थे।

श्रीमती एनीबीसेण्ट :

स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने "हिन्दुस्तान हिन्दू हिन्दुस्थानियों के लिए" का नारा लगाया था। (**Swami Dayanand was first to proclaim India for Indians**) आर्य समाज के लिए मेरे हृदय में शुभ इच्छाएं हैं और उस महान पुरूष के लिए मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है।

सी. एफ. आन्द्रेस :

दयानन्द के व्यक्तित्व और चरित्र के विषय में सर्वत्र प्रशंसा की जा सकती है। वे सर्वथा पवित्र और अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाले महानुभाव थे। वे सत्य के अत्यधिक प्रेमी थे।

लाला हरदयालजी एम. ए.

न तो मैं आर्य समाजी हूं और न मुझे मतमतान्तरों के झगड़ों का शौक है, लेकिन महर्षि स्वामी दयानन्द जी के काम को इतिहास और सामाजिक शास्त्र की दृष्टि से परखा जा सकता है। स्वामी दयानन्द जी एक बड़े सुधारक थे। उन्होंने भारतवर्ष और जाति के सुधार के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया था।

शेष अगले अंक में...........

वेदों में क्या है ?

प्रत्येक को ईश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

मन्त्र – यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन।
स धीनां योगमिन्वति। ऋग्वेद / सूत्र 18

भावार्थ – परमात्मा की कृपा के बिना किसी विद्वान का भी कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है। क्योंकि वही बुद्धि का देने वाला है।

व्याख्यान – प्रत्येक शुभ के लिये विद्या और बुद्धि चाहिए, इस बात से सभी सहमत हैं। ऐसा कोई नहीं है, जो कह सके कि बिना विद्या और बुद्धि के कोई कार्य सफल हो सकता है। हम पहले किसी वस्तु के बारे में ज्ञान रखते हैं तब उसे करते हैं। किन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं, जो इसमें ईश्वर की सहायता की आवश्यकता नहीं समझते है। पाश्चात्य देश के कुछ व्यक्तियों ने दावा किया था कि हमने व्यवहारिक जगत से ईश्वर का सर्वथा बहिस्कार कर दिया फिर भी हमें किसी प्रकार की हानि नहीं हुई। किन्तु अब यूरोप के ही विद्वान इन विचारों का खण्डन कर एक अदृश्य शक्ति के रूप में परमात्मा पर विश्वास करने लगे हैं। बिना ईश्वर की सहायता के उन्हें अपना समस्त पुरूषार्थ अधूरा प्रतीत होता है। ईश्वर का सानिध्य हमें आत्मशक्ति, स्फूर्ती, नूतन भावना प्रदान करता है। हमारी बुद्धि को सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। परमात्मा बिना मांगें स्वयं हमारी हर शुभ कार्यों में सहायता करता है तथा मांगने पर भी दुष्कर्मों में मदद नहीं करता है।

जिस प्रकार केशर–कस्तूरी युक्त शीतल जल झरने में स्नान करने से शरीर सुगन्धित हो उठता है। उसी प्रकार परमात्मा की दया रूपी झाने में स्नान से हमारा मन निर्मल, स्वच्छ व निर्विकार हो जाता है।

जब मन साफ हो, बुद्धि कल्याणकारी हो तो उसके द्वारा सद् कार्यों की ही प्रेरणा हमें मिलेगी। यह सब तभी संभव है जब परमात्मा की हम पर कृपा हो। **किसी कवि ने ठीक ही लिखा है –**

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है,
दुर्बलता, दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।
जग का बनाने वाला तू, जग का मिटाने वाला तू,
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।
माता तू ही, पिता तू ही, बन्धु तू ही, सखा तू ही,
केवल तुम्हारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।
तेरा भजन, तेरा मनन, तेरी ही धुन, तेरी लगन,
तेरी शरण में आए हम, तुम बिन हमारा कौन है।

इसलिए परमात्मा हमारा रक्षक है, प्राणों से प्यारा, सर्वज्ञ है, सर्दव है, नित्य है, पवित्र है, उसकी कृपा प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बनावें।

बोध कथा

चिड़िया और महात्मा

एक प्रसिद्ध महात्मा ने अपना घर बार छोड़कर जंगलों में जीवन के रहस्यों को जानने हेतु कठिन साधना की। परन्तु उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। इससे उनका मनोबल गिरने लगा। अन्त में उन्होंने हार मानकर घर की ओर प्रस्थान कर लिया।

रास्ते में उन महात्मा को एक नदी दिखाई दी। वे थके हुए थे, इस कारण उसी नदी के किनारे बैठ गये। उस महात्मा को यहाँ बैठे अभी कुछ ही समय बीता था कि उन्होंने देखा कि एक चिड़िया अपने मुंह में दूर से मिट्टी भरकर लाती और उसी नदी के किनारे पर डाल देती और मिट्टी लेने फिर चली जाती।

यह सिलसिला लगातार चलता जा रहा था, तो उन महात्मा से न रहा गया। उन्होंने उस चिड़िया से जिज्ञासावश पूछ ही लिया कि – यह तुम क्या कर रही हो ?

इस पर चिड़िया ने उत्तर दिया – महात्मा जी मैं इस नदी के किनारे को ऊंचा करने का प्रयास कर रही हूं।

उस महात्मा ने फिर पूछा – तुम ऐसा किसलिए कर रही हो ?

उस चिड़िया ने उत्तर दिया – इस नदी किनारे मेरा घोंसला था। इसकी बाढ़ ने मेरे बच्चों को डुबो दिया है। जब किनारा ऊंचा हो जाएगा तो मेरे घोंसले को बाढ़ का खतरा नहीं रहेगा। इसलिए ऐसा कर रही हूं।

महात्मा उसके जवाब से बड़े चकित हुए और उस चिड़िया को समझाने की दृष्टि से बोले – यह किनारा तो पर्याप्त लम्बा–चौड़ा है और तुम तो बहुत छोटी हो। क्या तुम इस काम को करने में कामयाब हो पाओगी ?

चिड़िया बोली, मुझे तो अपना काम करना ही है, समय चाहे कितना भी लगे, मैं निश्चय ही कामयाब होऊंगी।

उस चिड़िया के उच्च मनोबल, दृढ़ संकल्प शक्ति और कर्मठता को देखकर उन महात्मा को एक नई दृष्टि प्राप्त हुई। तब उनके मन में एक नया मनोबल जागृत हुआ। उन्होंने उसी क्षण घर वापस जाने का विचार अपने दिमाग से निकाल दिया और पुनः जंगल में जाकर साधना में लीन हो गए।

इस कहानी का तात्पर्य यह है कि, यदि व्यक्ति के अन्दर उँचा मनोबल और स्थायी संकल्पशक्ति हो तो वह बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल कर सकता है।

असफल वही होता है, जिनके पास ऊँचे मनोबल एवं दृढ़ संकल्पशक्ति का अभाव होता है।

सोते समय दक्षिण दिशा में पैर क्यों नहीं करते ?

वैदिक शिक्षाओं के अनुसार मनुष्य के मस्तिष्क में एक शक्ति होती है, जिसे अंग्रेजी में मेगनेट तथा अरबी में कुब्बते जांजवा कहते हैं। उस शक्ति का धड़कने वाला भाग अधिकतर मनुष्य की चोटी की ओर होता है। जब शिर उत्तर की ओर होता है तब उसकी गति नियत, परिमाण में बढ़े जाती है। जब मनुष्य दक्षिण की ओर पैर करके सोएगा ओर देह गति का कम्पन्न मस्तिष्क में न पहुंचेगा और मस्तिष्क स्थिर होगा तो मैग्नेट शक्ति अपना काम करेगी और भड़कने लगेगी। यदि कोई मनुष्य सदा दक्षिण की ओर पैर करके सोए ता एक वर्ष में उसका मस्तिष्क डांवाडौल हो सकता है, सिर में दर्द व्याप्त हो सकता है और कुछ काल पश्चात पागल हो सकता है।

प्रसन्नता है पी टी आई द्वारा (29–8–1983) प्रसारित समाचार के अनुसार दो भारतीय डॉक्टरों ने जिन्होंने मानव मस्तिष्क पर पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति के प्रभाव का अध्ययन किया है उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि की है।

अध्ययन रिपोर्ट का निम्न लिखित अंश दृष्टव्य है –

It you lie with head to the north cerain conspicuous brain waves get highly supressed leacing to possible confusion depressed spirits restlessness and a general sloth.

नास्तिक

सृष्टि सृजक प्रभु एक दिन सुबह की सैर को निकले थे। उन्होंने देखा एक गृहिणी घर ऑगन बुहारकर साफ कर रही है। गोबर लिपे आंगन के चारों ओर छोटे छोटे फूल खिले हैं, जिनकी सार संभाल कर उनमें पानी दिया, फिर नहा धोकर गीले कपड़े अलगनी पर डाले और द्वार पर रांगोली बनाई। सास ससुर की चरण वन्दना कर उन्हें चाय दी। पतिदेव के लिए नाश्ता लगाया। चारों ओर सुख शान्ति व सौंदर्य बिखरा था। उस घर से आती हवा भी लय में बह रही थी। इधर पड़ोस में मानो तूफान सा उठा था। अरे, मेरी पूजा की थाली कहॉ है ? अगरबत्ती नहीं मिल रही है। दीये की रेडीमेड बत्तियों का पैकेट क्या चूहे ले गये? और तू यहॉ खड़ा–खड़ा क्या कर रहा है? गया नहीं अभी तक ? पूजा के लिए फूल लाने को कहा था न तुझे नासमिटे ? सारी उठा पटक करने के बाद उन्होनें नौकर पर क्रोध निकालना चाहा। गया था मालकिन, पड़ोस वाली भाभी ने फूल तोड़ने से मना कर दिया। कहा कि फूल तो पौधों पर ही अच्छे लगते हैं। वह जल्दी से बोला। अरे बेवकूफ। तूने उससे पूछा ही क्यों ? चोरी चुपके से तोड़ लाता। वह तो है ही नास्तिक। वे झुंझलाई। प्रभु चकरा गए, मैंने ईश्वर पूजा का मतलब यह तो नहीं चाहा था। वे समझ चुके थे कि आस्तिक कौन है और नास्तिक कौन।

लाला लाजपत राय

जिनकी 28 जनवरी को जयंती है

आर्य समाज के जिन महापुरूषों ने स्वदेश हित के लिए सर्वोत्कृष्ट बलिदान किये, उनमें लाला लाजपत राय का नाम चिरस्मरणीय है। ये वही बलिदानी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्र–भक्ति का पाठ उन्होंने स्वामी दयानन्द से सीखा है, और आर्य समाजी रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाए हैं।

लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुँढिके में 28 नवम्बर 1865 को हुआ। उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे।

1880 में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाजपतराय लाहौर आए। गवर्नमेंट कॉलेज से एफ. ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएँ साथ साथ उत्तीर्ण कीं। 1882 के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए। लाला साईंदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बनें। पं. गुरूदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहाँ कॉलेज में लाला लाजपत राय के सहपाठी थे, वहां ये लोग आर्य समाज में भी उनके सहयोगी थे।

डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपत राय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि मण्डलों के सदस्य बनकर कॉलेज की स्थापना के लिए धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगरों में जाते रहे। जब यह महाविद्यालय सुचारू रूप से चल पड़ा, तब इसकी शिक्षा नीति को प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी. ए. वी. कॉलेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरूप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्यनेताइओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए, किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। 1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और सत्याग्रह के आन्दोलन चलाए गए और सरकारी स्कूलों और कॉलेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी ए वी कॉलेज के संचालकों को, देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कॉलेज बन्द कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने अपनी दूरदर्शिता से ऐसा कदम उठाने से इंकार कर दिया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जानी चाहिए।

लाला लाजपत राय ने 1885 में वकालात की परीक्षा पास की। कुछ काल तक रोहतक तथा हिसार में वकील के रूप में कार्य करने के पश्चात वे लाहौर आ गए। शीघ्र ही उन्हें अपने कार्य में आशा से अधिक सफलता मिली। कानून के पेशे में भी उनकी प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी।

1888 में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े। प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। 1906 में वे पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ, कांग्रेस के शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैंड गए। वहां से वे अमरिका चले गये और देश की स्वतन्त्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया।

लाला लाजपतराय ही प्रथम महापुरूष थे, जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया, और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतन्त्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से, कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचारधारा का प्रवेश कराया। उन्होंने 1905 की बनारस कांग्रेस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय उनका स्वागत करने का डटकर विरोध किया। सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था।

आर्य समाज में रहकर ही लालाजी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। 1899 में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया, तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। 1920 में विदेश यात्रा से लौटने पर, उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया। इसी वर्ष वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। 1924 में उन्होंने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए। स्वामी श्रद्धानन्द और पं. मदनमोहन मालवीय की ही भांति लालाजी का कांग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टिकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसलिए उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य में सहयोग दिया।

1928 में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायजा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन कमीशन यहां भेजा गया। कांग्रेस ने इसके बहिष्कार का निर्णय लिया। सारे देश में सायमन कमीशन के विरोध के स्वर गूंजने लगे। कमीशन के सदस्य जिन–जिन नगरों में गए, वहां–वहां उसके विरोध में कमीशन का बहिष्कार करने का निश्चय हुआ।

30 अक्टूबर 1928 को कमीशन लाहौर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेल्वें स्टेशन पर ही काले झण्डे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने 144 धारा लगा दी। तथापि, सैकड़ों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। "सायमन कमीशन वापस जाओ" के नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला। निहत्थे नागरिकों पर डण्डा प्रहार होने लगा। अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढ़े शेर को मार्मिक आघात पहुंचा। उसी सायंकाल आयोजित जन सभा में नरकेसरी लाला लाजपतराय ने गर्जनापूर्ण स्वर में कहा, "मेरे शरीर पर पड़ी विदेशी सरकार की एक–एक लाठी अंग्रेजी राज्य के कफन की कील साबित होगी।" इसी लाठी प्रहार से पीड़ित होकर लाला लाजपतराय का 17 नवम्बर 1928 को निधन हो गया।

लाला जी का व्यक्तित्व बहुअयामी था। वे एक श्रेष्ठ वक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्ता समर्पित समाज सेवक, शिक्षाशास्त्री, गंभीर चिन्तक तथा विचारक थे। उनकी लिखी "दि आर्यसमाज" नामक पुस्तक 1914 में इंग्लैण्ड से प्रकाशित हुई। लालाजी ने अपनी आत्मकथा भी लिखी है।

बंधन मुक्त जीवन से ही जीवन की सार्थकता

आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णातरग्ङ्कुला,
रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।
मोहावर्त सु दु स्तराऽतिगहना प्रोतुग्ङत्रचिन्तातटी,
तस्या परागता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः।।

(भर्तृहरिकृत – वैराग्यशतक, श्लो. 40)

भावार्थ – इस संसार में एक आशा नाम की नदी है। यह नदी मनोरथ, इच्छारूपी जल से भरी हुई है। इसमें तृष्णालोभ रूपी तरंगें उठ रही हैं। यह राग द्वेष रूपी मगरमच्छों से परिपूर्ण है तथा तर्क–वितर्क रूपी जल पक्षी इसमें तैर रहे हैं। धैर्यरूपी वृक्षों को उखाड़ने वाली इस नदी में अज्ञान रूपी भंवर उठ रहे हैं। इस नदी के दोनों किनारों पर ऊँचे–ऊँचे चिन्ता रूपी तट हैं। इस नदी को पार करना बहुत कठिन है, परन्तु इस नदी को शुद्ध अन्तःकरण वाले त्यागी, तपस्वी, विरक्त, योगी पार करके बन्धनों से छूटकर ब्रह्मानन्द को भोगते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया का सफल आयोजन

आर्य समाज गौरवमयी परम्परा की पुर्नस्थापना का सफल आयोजन आस्ट्रेलिया की राजधानी सिडनी में सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन के आयोजन को लेकर प्रारंभ में आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा के मन में अनेक संशय व कार्य को भव्य स्वरूप दे पाने की भावना थी। इसका सबसे बड़ा कारण इस प्रकार का कार्यक्रम पूर्व में कभी सम्पन्न हुआ ही नहीं। ऐसा सम्मेलन करने की तो दूर उसकी स्वप्न में भी सोच नहीं थी।

किन्तु जो कार्यक्रम हुआ उसने सबको स्वयं आयोजकों को आश्चर्य चकित कर दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रत्यक्ष सम्पर्क से वर्षों से दूर इस देश में आर्य समाज का संगठन था।

संगठन में एकरूपता नहीं थी किन्तु सम्मेलन की तैयारी व सब आर्यजनों को संगठित करने का कार्य सार्वदेशिक सभा द्वारा किया गया। सम्मेलन से 7 माह पूर्व आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, फिजी का दौरा किया गया। दौरे में सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य, साथ ही उपमन्त्री श्री विनय आर्य तथा वर्तमान कार्यक्रम संयोजक श्री योगेश आर्य (आस्ट्रेलिया) थे।

आस्ट्रेलिया में सिडनी, मेलबर्न, ब्रिसबर्न के आर्यों की अलग–अलग स्थान पर बैठकें लीं। उन्हें इस सम्मेलन के महत्व और होने वाले लाभों से अवगत करवाया। इसी कार्य हेतु न्यूजीलैण्ड और फिजी देशों में भी जाकर वहां कई व्यक्तियों से मिले, कई बैठकें लीं, कुछ आपसी मनभेद भी थे। उसका निराकरण किया गया। सभी ओर से सम्मेलन को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन प्राप्त हुआ। सार्वदेशिक सभा द्वारा भी 15000/– आस्ट्रेलियन डॉलर के सहयोग की और पूर्ण सहयोग का आश्वासन प्राप्त होते ही एक नव चेतना का संचार आयोजकों में हो गया और कल्पना से बहुत भव्य व सार्थक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में 13 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लगभग 1100 से अधिक आगन्तुकों का पंजीयन हुआ। यह इस क्षेत्र के तीनों देशों के लिए पहला अवसर था।

आयोजन के पूर्व आचार्य आशीष जी 2 माह पूर्व से ही आस्ट्रेलिया में रहे, वहां अनेक परिवारों को उपदेश दिया, मांसाहार छुड़वाया, नए व्यक्तियों को आर्य समाज से जोड़ा तथा सम्मेलन में उपस्थित होने की प्रेरणा दी। आपका यह प्रयास अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ।

इसी भावना से आचार्य सनदकुमार जी भी कार्यक्रम के पहले ही आस्ट्रेलिया पहुंचे थे और उनकी भी महत्वपूर्ण भूमिका इस सफल आयोजन में रही।

पूरे कार्यक्रम में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सैकड़ों नवयुवक, नवयुवतियों, बालकों, किशोरों ने भाग लिया। भाषण, प्रश्नोत्तर, नाटक व भजनों की प्रस्तुति में भाग लिया, कार्यक्रम स्थल पर सेवा कार्य में जुटे रहे।

पूरे सम्मेलन में वैदिक धर्म के गंभीर मुद्दों पर, वैदिक धर्म परिचय, यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप, महिला सम्मेलन, शाकाहार पर भाषण, तथा संगठनात्मक स्वरूप पर विभिन्न विद्वानों ने बहुत ही सरल, हृदयग्राही, प्रभावी व्याख्यान व प्रवचन दिए।

इनमें प्रमुख रूप से डॉ. सतीषप्रकाश (अमेरिका), आचार्य आशीष जी, आचार्य सनदकुमार जी, डॉ. सत्यपालसिंहजी, के अतिरिक्त न्यूजीलैण्ड, फिजी व स्थानीय वक्ताओं ने भाग लिया।

सिंगापुर, सूरीनाम, हॉलैण्ड, मॉरीशस, न्यूजीलैण्ड, फिजी, अमेरिका, नेपाल, इंग्लैण्ड, कैनेड़ा, भारत आदि थे। भारत से लगभग 125 व्यक्तियों ने भाग लिया।

जिस प्रकार भारत में पद्मभूषण के पद से सम्मानित किया जाता है वैसे ही फिजी सरकार द्वारा श्री कमलेश आर्य को आस्ट्रेलिया सरकार द्वारा श्री डॉ. निहालसिंह व कैनेड़ा द्वारा हरिकिशन वाश ने को सम्मानित किया, उन्हें मंच पर आमन्त्रित कर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का प्रभाव इतना अधिक हुआ कि फिजी, न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया में एक नव जागरण, नव चेतना परिलक्षित होने लगी।

एक संगठन की घोषणा की गई, स्पेसिफिक आर्य महासम्मेलन के नाम पर तीनों देश मिलकर प्रतिवर्ष एक एक देश में बड़े स्तर पर आर्य समाज का सम्मेलन करेगें। किन्हीं कारणों से आपसी मदभेदों का भी शयन इस सम्मेलन में हुआ। जो कभी एक साथ नहीं बैठते थे, वे ही अब न्यूजीलैण्ड में 2016 में ऐसा आयोजन मिलजुलकर आयोजित कर रहे हैं। इनके साथ अन्य दोनों देश फिजी एवं आस्ट्रेलिया भी सहभागी रहकर कार्यक्रम को सफल बनावेगें। फिजी की ओर से 2017 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन करने का प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा को दिया है।

आगामी वर्ष 2016 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल में आयोजित किया जावेगा, इसमें वहां से अनेक आर्यजन भाग लेने आवेगें, ऐसी घोषणा की है।

आयोजन अत्यन्त सफल हुआ, उसका कारण था, आस्ट्रेलिया के अनेक आर्यजन सपरिवार इसकी सफलता में जुट गए थे। यह भी किसी बड़े आयोजन में

पहलीबार ही देखा गया कि 1000–1200 सौ व्यक्तियों के प्रातःराश और भोजन की व्यवस्था आस्ट्रेलिया के विभिन्न आर्य समाज के सदस्यों ने बारी–बारी से निभायी। भोजन बनाना, वितरित करना, भोजन करने की व्यवस्था करना, सफाई करना, यह सबकुछ आर्य समाज में होता देख सभी इस सेवाभाव की भूरी भूरी प्रशसा कर रहे थे। नाश्ता व भोजन इतना स्वादिष्ट कि प्रत्येक के मुंह पर उस संबंध में प्रशंसा के शब्द थे।

कार्यक्रम स्थल की व्यवस्था, साज सज्जा, बैठने की व्यवस्था अत्यन्त आकर्षक व सुविधाजनक थी। 5 एकड़ भूमि पर नवनिर्मित भवन व विशाल मैदान में सबकुछ व्यवस्थित था।

आर्ष साहित्य ट्रस्ट की ओर से श्री धर्मपाल आर्य द्वारा लगभग 5 लाख रूपए की पुस्तकें आस्ट्रेलिया सभा को दान में दी गई। साथ ही आस्ट्रेलिया सभा को इस आयोजन में दी जाने वाली दान राशि 15,000/– डालर की पूर्ति हेतु 2000 डालर एवं श्री सुरेशजी अग्रवाल ने भी 2000/– डालर का सहयोग श्री धर्मपालजी द्वारा प्रदान किया।

भारत की ओर से यात्रियों को ले जाने का उनकी व्यवस्था करवाने का बहुत महत्वपूर्ण कार्य सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवालजी द्वारा किया गया। आपका स्वास्थ यात्रा के 5–6 दिन पूर्व तक ठीक नहीं था, परिवार जन भी न जाने देना चाह रहे थे किन्तु आपने अपनी जवाबदारी का निर्वाह करने की भावना से विपरीत परिस्थितियों में भी इस जोखिम को उठाते हुए यात्रियों के साथ यात्रा की और सारी व्यवस्था संभाली। सम्मेलन के पश्चात भी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड की यात्रा व्यवस्था करवाई।

सम्मेलन में पहुंचे सभी यात्री अत्यन्त प्रसन्न व संतुष्ट थे। कार्यक्रम प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक भोजन काल को छोड़कर निरन्तर चलता रहा जिसके प्रत्येक सत्र में श्रोताओं की अच्छी उपस्थिति रही। समय हो जाता परन्तु श्रोता सुनना चाहते थे ऐसा यह पहला ही दृश्य था। कुल मिलाकर इन तीनों देशों में (फिजी, न्यूजीलैण्ड, एवं आस्ट्रेलिया) आर्य समाज के कार्यों हेतु एक नए उत्साह और संगठन का सृजन हुआ है। इसके अतिरिक्त अन्य देशों से आए सदस्यों पर भी कार्यक्रम का अच्छा प्रभाव हुआ है।

योगेश आर्य के साथ ही जगदीश शर्मा, प्रमोद राय, राजेश मलिक, ब्रह्मदत्त खट्टर, राजेश समतुहल, अमरसूद आदि का विशेष सपरिवार सहयोग रहा।

वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ

दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई 2016 तक

मान्यवर,

भारत वर्ष में कुंभ और सिंहस्थ के नाम पर संभवतः ये विश्व के सबसे बड़े आयोजन होते हैं। जिसमें एक माह तक करोड़ों की संख्या में जन मानस का अपना जाना होता है।

हम प्रयास करके भी कभी इतनी बड़ी संख्या एकत्रित नहीं कर सकते। यह हमारी बात, वैदिक सिद्धान्तों को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा समय है। इस बार 22 अप्रेल से 21 मई तक एक नहीं दो स्थानों पर पांडाल लगाकर वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। इसके द्वारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम आने वाली इतनी बड़ी संख्या में से लाखों व्यक्तियों तक अपनी बात पहुंचावेगें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसे ही अवसर पर कुंभ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी।

भव्य यज्ञशाला, प्रवचन, व्याख्यान, भजन की प्रस्तुती, विशाल प्रदर्शनी, विचार चैनल के माध्यम से लघु फिल्म शो, विक्रय हेतु अनेक स्टॉल, वैदिक विचारधारा का निःशुल्क साहित्य वितरण, बाहरी साज सज्जा यह सबकुछ अभूतपूर्व करने का प्रयास प्रारंभ हो चुका है।

किन्तु हम सबका सहयोग ही इस पवित्र वेद प्रचार के भव्य आयोजन को सफल बना सकता है।

अतः कृपया सभी इस पवित्र कार्य में अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम हेतु आवश्यक सुझाव भी आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन के पते पर भेज सकते हैं।

सभी दान राशि **"सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति"** के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भेजें।

SBI A/c No. 35072661286 IFS Code : SBIN0000492

दान राशि खाते में जमा कर या जमा स्लीप पर अपना नाम, स्थान एवं पता लिखकर फोटो कॉपी भिजवायें।

Email : aryasmjujnkumbh2016@gmail.com

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी	**लक्ष्मीनारायण पाटीदार**	**वेदप्रकाश आर्य**
सभाप्रधान	संयोजक	कोषाध्यक्ष
म.भा.आ.प्रति.सभा	वैदिक धर्म प्रचार समिति	वैदिक धर्म प्रचार समिति
9425137097	**9827078880**	**9425930484**

यज्ञ का महत्व

वांछित कामनाओं को पूर्ण करने वाले कर्म को यज्ञ कहते हैं।

1. यज्ञ ही कल्पतरू है।
2. यज्ञ सर्व श्रेष्ठतम कर्म हैं।
3. यज्ञ करने वाले स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।
4. यज्ञ से समस्त वायुमण्डल शुद्ध होता है।
5. यज्ञ से शरीर स्वस्थ एवं दीर्घायु होता है।
6. यज्ञ से पाप करने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है।
7. यज्ञ से मनुष्य ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखता है।
8. यज्ञ से शरीर, इन्द्रिय, मन एवं आत्मा शुद्ध होते हैं।
9. यज्ञ करो और यश पाओ, यज्ञ करने वाले यश पाते हैं।
10. यज्ञ से मनुष्य सर्वहित में अपना हित समझने लगता हैं।
11. यज्ञ से आत्मा को परमात्मा का सानिध्य प्राप्त होता है।
12. यज्ञ मानव को दानशील बनाता है, दूसरों को देना सिखाता है।
13. यज्ञ से वैर भाव की प्रवृत्ति नष्ट एवं मित्र भाव की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है।
14. यज्ञ से किसी दूसरे के पदार्थों को अपना समझने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है।
15. यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है स्व का त्याग।

प्रिय पाठकगण,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार मह्‌ू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

आओ हम यज्ञमयी जीवन जियें–आचार्य अग्निहोत्री

– ओ.पी.आर्य द्वारा

कुरवाई जिला विदिशा। हम ईश्वर के द्वारा प्रदत्त वेदों के सत्य ज्ञान से जुडे हैं, हमारी संसार की सबसे पुरातन आर्य सनातन संस्कृति है, संसार को श्रेष्ठ बनाना हमारा कर्तव्य है, प्रकृतिक संतुलन, तथा पर्यावरण की रक्षा हेतु हम पंच देवों की यथोचित पूजा करते हैं, हमारा पूरा जीवन परोपकार करते हुए व्यतीत हो, आओ हम अपने जीवन को यज्ञमयी बनायें, यह विचार यहां वेद मन्दिर आर्य समाज मेहलुआ चौराहा पर आयोजित गायत्री महायज्ञ के द्वितीय दिवस आगरा से पधारे आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री ने व्यक्त किए। इस मौके पर वैदिक विद्वान श्रीराममुनि वानप्रस्थी आगरा, मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक कमलकिशोर शास्त्री, शिवमुनि वानप्रस्थी सिरौंज, आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान राम मुनि वानप्रस्थी के प्रवचन भी हुए। गायत्री महायज्ञ यहां 4 दिसम्बर से आरम्भ हुआ, जिसका समापन 6 दिसम्बर को हुआ।

आचार्य अग्निहोत्री ने कहा कि आज सारा देश अन्ध विश्वास में डूबा हुआ है, वेदों में परमात्मा को सर्वज्ञ कहा गया है, परमात्मा के अनेक गुण हैं, जिनके अनुसार उन्हें अनेक नामों से पुकारा जाने लगा है, राजा जनक के राज्य में सर्वश्रेष्ठ विद्वान चुने गए महर्षि याज्ञवल्कय के द्वारा लिखे गए उपनिषद का नाम शतपथ ब्राहम्मण है, जिसमें पंच देवों का विधान बताया गया है, जिनमें मातृदेव, पितृदेव, आचार्यदेव, अतिथिदेव, पति या पत्नि देव, को संसार में सम्मान देने के निर्देश दिए गए हैं। इनके अतिरिक्त जो प्राकृतिक देवता हैं वह 11 रूद्र जो हमारे शरीर में रहते हैं, जिन्हें हम अपनी दिनचर्या से शांत रख सकते हैं, यदि खान,पान, आचार,विचार, व्यवहार ठीक नहीं रखा, तो यह रूद्र देव नाराज हो जाते हैं, और मनुष्य का शरीर व्याधियों से घिर जाता है। 12 आदित्य जो वर्ष के बारह महीना हैं, 8 वशु जो कि सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र,, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश हैं, जिनके सहयोग से जीवन जिया जाता है। इस तरह प्रकृति का सारा वातावरण देवता है, जो जीव मात्र के कल्याण का प्रबन्ध कर रहा है, जीवों का कर्तव्य है कि वह इस सुरम्य वातावरण की रक्षा करें, यही इन देवताओं की पूजा है। आचार्य श्री अग्निहोत्री ने यज्ञ की व्याख्या करते हुए कहा कि देवपूजा, संगतिकरण, तथा दान करना यज्ञ की श्रेणी में आता है। देवता उसे कहते हैं जो स्वयं प्रकाशित होकर अन्यों के कल्याण के लिए तत्पर रहता है। महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वति ने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हमें अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश उपहार में दिया है, जिसमें देवताओं के 100 नामों का उल्लेख किया गया है, हम अपने चारों ओर के वातावरण को स्वच्छ, व्यवस्थित, और दिव्य गुणों से परिपूर्ण बनाने काम जिस दिन शुरू कर देंगें, हमारा जीवन यज्ञमयी बन जायेगा। गायत्री महायज्ञ के माध्यम से बास्तव में हम अपनी आत्माओं में सद्गुणों का प्रकाश करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। और यही गायत्री महामंत्र का अर्थ है।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक **- प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 9826217062